(7) नाट्यानुवाद की समस्याएँ :-

साहित्य की किसी भी विधा का अनुवाद अपने आप में एक चुनौती है। नाट्यानुवाद उस चुनौती को एक नया आयाम देता है। अन्य विधाओं के मुकाबले नाटक की यह विशेषता है कि अपने लिखित रूप से लेकर दर्शकों तक पहुँचने की प्रक्रिया में, लिखित रूप के ही आधार पर, कई व्यक्तियों का इसमें सृजनात्मक योगदान होता है।

साहित्यिक विधात्मक दृष्टि से देखा जाए तो नाटक दृश्य विधा है वैसे अनुवाद की जटिलता काव्य के बाद नाट्यानुवाद का स्थान गिना जा सकता है। अतः नाटक के अनुवाद की समस्या काव्यानुवाद की समस्या से बिलकुल भिन्न है। नाटक गद्य में भी हैं और पद्य में भी। पद्य-नाटकों के अनुवाद की समस्या और भी जटिल हो जाती है, क्योंकि सामान्यतः सभी पद्य-नाटकों में संभाषणों द्वारा ही पृष्ठभूमि का निरूपण होता है। चूँकि नाटक संवादात्मक कला है। अतः इस कला में रंगमंचीयता गुण भी रखना होता है। नाटक अभिनेय होता है अतएव नाटक के अनुवादों में सर्जनात्मक प्रतिभा के साथ-साथ अभिनय कला का ज्ञान भी अपेक्षित है। सभी अनुवादों की तरह नाट्यानुवाद की समस्या भी नामकरण से ही शुरु हो जाती है। अभिनेता और दर्शकों तक पहुँचकर रस-निष्पत्ति की बात नजरअंदाज करने पर समर्थ हाथों से भी एक तरह का संकोचन हो जाता है।

क्रमशः ......

Scanned with CamScanner

(8) नाट्यानुवाद की प्रमुख समस्याएँ :-

(i) भाषा समस्या (सटीक अभिव्यक्ति) (गद्यात्मक) (आंगिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य)

(ii) रंगमंचीयता (मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि संयोजन)

(iii) संवाद योजना - (शब्दों, बलाघात, खास मुहावरे आदि)

(iv) पात्र/चरित्र-चित्रण) (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ग्रामीण/शहरी)

(v) भाव एवं रस व्यंजना की समस्या

(vi) अभिनेयता

(vii) संगीत एवं गीत

—x——x————

Scanned with CamScanner